SIKARLIVE.COM
चालो...........
चालो....................
राजस्थान
जठे बिराजे आपनो
देवी देवता ।
२२ से २८ जनवरी 2017
नियामतपुर से राजस्थान
Written by ;
Avishek Agarwal
(CHinakuri SHyam PAriwar)

चालो चालो राजस्थान जठे बिराजे आपनो देवी देवता

ये किताब किसी भी अलग भावना से नही लिखी जा रहा है बलकी, एक भक्त कि व्यथा-भावाना और अपनी इच्छा हेतु लिखा जा रहा है।

जिसमें केवल

खाटु श्याम जी,

माँ राणी सती दादी जी,

शालासर(बालाजी),

माँ केडसती

पितर देव

और सभी देवी-देवताऔ

के महिमा एंव साथ ही ४० लोगो के तिर्थ का उल्लेख है ।

क्रिप्या इस किताब को किसी और मकसद से ना ले।

मुझे पता है कि इस किताब में बहोत सारी खामीयाँ है, जिसको नजर अंदाज नही किया जा सकता है फिर भी अपनी अपना छोटा भाई समझ कर छमा करियेगा।

इस किताब के लेखक : अभिषेक अग्रवाल, चिनाकुड़ी श्याम परिवार, श्री श्याम एंव दादी मंदिर, नियामतपुर, पश्चिम बंगाल, ७१३३७२
मो० +91 7063894274 (Whatsapp) / 9749776330
chinakuribazar@gmail.com / Chinakuri Shyam Pariwar (Facebook)

चालो चालो राजस्थान जठे बिराजे आपनो देवी देवता

चालो चालो राजस्थान जठे बिराजे आपनो देवी देवता

चालो चालो राजस्थान जठे बिराजे आपनो देवी देवता

to **27th Jan, 2017**

!! JAI GANESH JI MAHARAJ !!

!! JAI SHREE SHYAM !!

!! JAI DADI KI !!

!! JAI SALASAR MAHARAJ KI !!

!!KED SATI MATE KI JAI !!

चालो चालो राजस्थान जठे बिराजे आपनो देवी देवता

प्रिय भक्त,

आप सबको बताते हुए हर्ष हो रहा है कि

22 जनवरी 2017, रविवार

को हमारे शिल्पांचल

(श्री श्याम एंव दादी मंदिर, नियामतपुर धाम)

से भक्तो की एक टोली

(पुरे 40 लोगो का परिवार)

ने सभी देवी–देवता, भक्तो के आर्शिवाद के साथ नए साल का आगाज

के साथ सभी के आर्शीवाद से सभी भक्तो को लेकर समपुर्ण किया गया।

इस पावन कार्य को करने के लिए बहोत सारे भक्तो कि सहायता पड़ी और हम उनका पुरे मन से

चालो चालो राजस्थान जठे बिराजे आपनो देवी देवता

धन्यवाद करते है और प्रार्थना करते है कि आप जैसे भक्तो के रहते भक्तो को कभी सोचने की जरुरत ना पड़े ।

श्याम एंव दादी मंदिर, नियामतपुर

अभिषेक बनेठिया, विवके जिंदल
प्रतिक अग्रवाल (लिखमानिया)

मनिष भईया जी, कलपेश भईया जी, प्रियंका दीदी एंव उनके भईया जी, हेमु भईया(नियामतपुर), अमित पिलानिवाला, (चिनाकुड़ी श्याम परिवार से – अभिषेक अग्रवाल, बिशाल अग्रवाल, ब्रिजकिशोर अंकल जी),, बजरंग अग्रवाल(मोनु), ताय जी,, दीदी जी, संतोष मौसी जी

और

बाकी सारे भक्तो कि बहोत हि एहम भुमिका थी पुरे यात्रा के दौरान ।

खास करके उनको धन्यवाद जो हमें सफर के प्रारंभ से लेकर अंत तक हर मुमकिन कोशिश में सहायता कि ।

आप सभी का तेह दिल से सुर्किया करते है ।

आप सभी पर बाबा श्याम एंव दादी जी कि किर्पा बनी रहे ।

चालो चालो राजस्थान जठे बिराजे आपनो देवी देवता

००अब आपको००

२२ जनवरी, २०१७

कि शुरुवात

नियामतपुर धाम

से

खाटु, झुनझुनू, शालासर एंव केडसती

२७ जनवरी, २०१७

तक का विवरन देना चाहुगाँ ।

दिनांक : २२ जनवरी २०१७, रविवार

समय रात्री १२ बजे लेकिन ट्रेन कि देरी की वजह से हमारे परविार का सफर सुबह ४ बजे प्रारम्भ हुआ

बाबा खाटु श्याम, दादी जी एंव सभी देवी-देवताओं के जयकारे के साथ सब अपने अपने दिये गये सिट न० पर बैठने के बाद हमारे ।

०० श्याम धनी का श्रिंगार ००

के साथ भजनो के साथ रिझाया गया ।

बाबा के भोग के नियमित समय पर उनको भजनो के साथ भोग लगाया गया ।

पुरे सफर के दौरान भजनो कि गुजँ और जयकारे लगती रही ।

::हमारा पहला पड़ाव :जयपुर::

दिनांक :- २३.०१.२०१७, सोमवार (एकादशी)

(समय - सुबह १०:२० बजे)

चालो चालो राजस्थान जठे बिराजे आपनो देवी देवता

स्थान : जयपुर रेलवे स्टेशन

जयपुर रेलवे स्टेशन में हमारे लिए लकसरी बस सेवा के लिए खड़ी थी ।
जो हमें रिन्गस धाम कें लिए ले गई (निशान हेतु)
रिंगस में पानी की कमी के कारण हम पहुचे खाटु नगरी, दोपहर १२:३० बजे, मित्र मंडल धर्मसाला, खाटु धाम ।
(शायद बाबा श्याम कि मरजी थी कि उनके धाम पुरा परिवार पहले पहुचे फिर उनका पवित्र निशान उठाए)

''खाटु धाम''

(समय - दोपहर १२:२० बजे)
(स्थान - ''मित्र मंडल धरमसाला'')
जहाँ सबने स्नान एंव अपना बैग - सामान रखा एंव भोजन करने के उपरान्त रिन्गस के लिए फिर से बस से रवाना हो गए ।

::हमारा दुसरा पड़ाव :रिन्गस::

''रिन्गश''

(समय - दोपहर १:३० बजे)
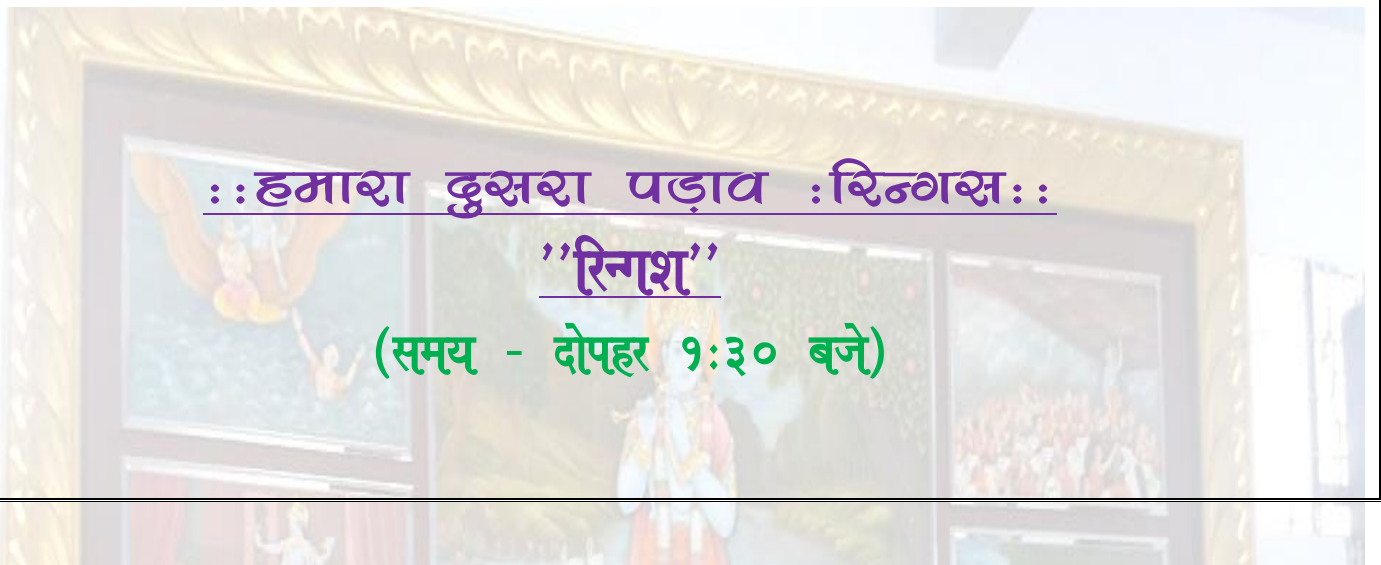
चालो चालो राजस्थान जठे बिराजे आपनो देवी देवता

(स्थान - ''पारास रामपुरिया धर्मशाला'')

रिंग्स पुरा परिवार पहुँच कर हम सबने खाटु श्याम जी किर्तन - आरती कर पवित्र निशान पुरे परिवार ने उठाया
हमारे लिए DJ कि वव्यसथा कि गई थी ।
DJ के भजनो में सरोर रिंग्स धाम, पुजन एंव जयकारे के बाद हमने निशान पद यात्रा प्रारम्भ की, निशान हातो में लेते ही बस पुरे परिवार को आंनद सा आ गया, सब मसती में झुमने नाचने लगे ।
(संध्या ४ से ४:३० के बिच ।)
और हम सब चल दिये खाटु श्याम की नगरी , सभी को एक चिन्ता लगी हुई थि की बाबा श्याम कही अपने बच्चो के लिए पट ना बंद करवा दे, क्योकी हमें पहोचते पहोचते रात्री ९ बज ही जाते ।

(„लेकिन कहते हैं,..............
किसमत् वालो को मिलता है श्याम तेरा दरबार,,,,,,,,,,
एंव छोड़ दो सारी चिन्ता बाबा करेगा बेड़ा पार,,,,,,,,,,)

चालो चालो राजस्थान जठे बिराजे आपनो देवी देवता

बस और क्या बाबा श्याम के मरजी के आगे किसकी चली है भला,

!! कहते थे सब – सुझाव देते थे सब !!

- ''नही चल पावोंगे १६ - १८ कि० मि० दुरी''
- ''चप्पल पहन लेना बहोत ठंड होगी''
- ''गरम कपड़े पहन कर रखना''
- ''रास्ता पुरा विरान है बहुत ठंडी हवाए चलेगी''

स्बने अपना कर्तव्य समझा हमलोगो को अपना सुझाव देने के लिए
जिसके लिए उनकी सरहाना करते है हम सब ।

''लेकिन बाबा श्यामजी का निशान हाथो में लेकर थाम''
हम सब थोड़ी बहोत कठिनाईयों के साथ १८ कि० मी० पैदल चल
आखिर पहुच हि गए खाटु नगरी
और

बाबा श्याम की इच्छा से कुछ श्याम प्रेमी हमारे साथ थे
(आस्था दीदी जी, जयकिसन भईया जी, आन्टी जी)
हमारे साथ जुड़े, जिससे हमलोगो कि यात्रा में और भी आनंद आने लगा
हम सब झुमते नाचते, भजन गाायन करते हुए, ठंडी हवाओं के बिच
पहुच ही गए हमारे खाटु श्याम की नगरी और

चालो चालो राजस्थान जठे बिराजे आपनो देवी देवता

::हमारा तिसरा पड़ाव :खाटु धाम::
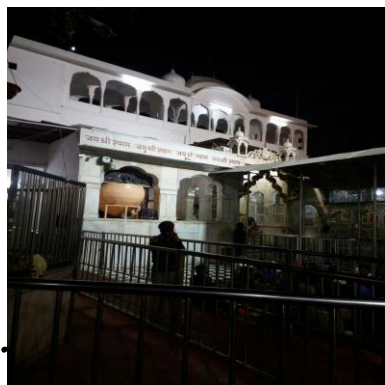
''खाटु धाम''

(समय - रात्री 09:00 बज से 9:45 तक)

साथ ही साथ बाबा श्याम की भजनो के सोर में बाबा श्याम को निशान अर्पन किया 09:05

!! खाटु श्याम-बाबा श्याम-लखदातार-हारे का सहारा-तिन बान धारी!!

इनके अनगिनत नाम

::निशान अर्पन करने से पहले:: खाटु श्याम जी के एक झलक के लिए मानो नैन तरस रहे हो । हर एक कदम-कदम पर बाबा श्याम को देखने कि ललाहक बढ़ती ही जा रही थी, और मेरा तो पहला मौका था । जैसे ही बाबा श्याम के दर्शन हुए मानो हम अपने आप को भुल चुके हो, उनके द्वार पर कदम रखते हि आखो में आँसु और शरीर के रेसे पुरे खड़े हो गए । पुरा परिवार आनंदमए था,

पुरे परिवार नें बाबा श्याम के नजरो से नजरे मिलाकर बस खो से गए बाबा की नगरी में । पुरा परिवार लगभग 45 से 50 मिनट बाबा श्याम के सामने आस - टकटकी लगा कर बैठ से गए । मानो हमारे मोहन आते कर रहे हो ।

उसके उपरांत आरती का समय था तो हम सबने बाबा श्याम के आरती गायन की ।

उसके उपरान्त बाबा श्याम का मोर छड़ी का झाड़ा का तो जवाब नही, समय कैसे बित्ता जा रहा था पता नही मानो कि एक प्यारा सा सपना

हो, पुरा परिवार बाबा श्याम के कदमो मैं बैठा हुआ हो, मन क्या दिल-तन कुछ भी मानने को तैयार नही था कि हम बाबा श्याम के आखो से एक पल के लिए भी ओझल हानें को, लेकिन आगे का सफर भी तय मुताबिक करना था, तो फिर क्या बस फिर बाबा श्याम के विशराम हेतु पट बंद कर दिया गया ।

उसके बाद हम सब परिवार भी विसराम हुतू मित्र मंडल धर्मसाला कि और बढ़े जहा सबसे पहले हमने भोजन किया और उसके उपरान्त बाबा श्याम को धन्यवाद दिया

कि

'' है श्याम धनी बस अपना दास अनाए रखना............

'' और मरते दम तक सेवा में लगाए रखना........................।।

दिनांक :- २४.०१.२०१७, मंगलवार

सभी भक्तो ने सुबह पहले स्नान किया

(जिन्हे श्याम कुण्ड जाना था वो गए या फिर धर्मशाला मे ही स्नान आदी किया गया)

फिर हम चले फिरसे बाबा श्याम के दरशन करने

गए तो गए बाबा श्याम जी का भव्य श्रींगार लाल-लाल गुलाब

मे, उनका मनमोहक श्रिंगाार देखते ही मन बस त्रिप्त सा हो उठा ।
सबने खाटु नरेश का दर्शन किया ।
साथ हि साथ प्राचिन श्याम मंदिर के भी दर्शन किए ।
इसके उपरांत सुबह का नाश्ता मित्र मंडल धर्मशाला के पास मे हि
कबुत्तर चौक में किया गया और फिर हम सब रवाना हुए
झुनझुनु कि सेठानी के लिए सुबह १० बजे के आस पास हमारे बस
सेवा के द्वारा ।
हम सबने खाटु श्याम जी को धन्यवाद दिया ।
और आग्रह किया कि फिर से जल्द बुलाना ।

!! (माँ राणी सती का दरबार)!!

दिनांक :- २४.०१.२०१७, मंगलवार

समय - सुबह १० बजे

सफर ३ - ४ घन्टे का सफर

खाटु से झुनझुनु के लिए उसी बस सेवा के द्वारा हम खाटु नगरी छोड़
चले हम झुनझुनु धाम के लिए ।
सफर हमारा बहोत हि मनमोहक पल हमें देता जा रहा था ।

चालो चालो राजस्थान जठे बिराजे आपनो देवी देवता

हम सब परिवार पुरी मश्ती में बाबा श्याम , दादी जी एंव सभी देवी-देवताऔ का नाम जपते हुए बस हम उनके छत्र-छाया में चले जा रहे थे ।

(मुझे तो मानो एसा लग रहाँ था कि *लिले घोड़े वाला,* वो *खाटु वाले श्याम धनी* अपने *लिले घोड़े* पर सवार हमें *झुनझुनु कि सेठानी* तक सही सलामत पहुँचा रहाँ हो, मानो *दादी जी* के आज्ञा से सब हो रहा हो, कभी दाए, कभी बाए कभी बस के उपर कभी अपने लिले घोड़े पर पंख लगाकर सभी भक्तो के घर में फेरी दे रहा हों ।

ये *खाटु वाले श्याम बाबा* की महिमा का बखान पता नही मैं कैसे लिख पा रहा हुँ मुझे भी ग्यात नही ।

आखे फिर से रोना चाहती है, फिर से एक बार सेठ - सेठानी के दरबार जाना चाहता हुँ ।)!!त्राहीमाम सरनागतम!!

हमारा चौथा पड़ाव

बालाजी

::(घोड़ीवारा कलां)::

दिनांक :- २४.०१.२०१७, मंगलवार

समय : दोपहर १:३० बजे ।

झुनझुनु जाते वक्त रासते में हम दोपहर लगभग १:३० बजे बालाजी मंदिर (घोड़ीवारा कलां) में रूके वहा बिराजे सभी देवी-देवताआ एंव हमारे बालाजी के दरशन पुरे परिवार ने किए और फिर से रवाना हो गए

चालो चालो राजस्थान जठे बिराजे आपनो देवी देवता

झुनझुनु के लिए खाटु श्याम जी के सागे ।

आखिर कार हम पहुँच हि गए झुनझुनु नगरी मेरी निगाहे दादी जी के विशाल दरवाजे को ढुंढ रही थी ।

किन्तु सभी भक्तो को भुख भी लगी हुई थी तो सबसे पहते हम सबने झुनझुनु नगरी में खाना खाया मिल बाटकर आनंद से ।

फिर खाने के उपरांत हम पहुँचे झुनझुनु धाम ।

::हमारा पाँचवा पड़ाव :

झुनझुनु मंदिर ! माँ राणी सती का दरबार !

समय संध्या ४ बजे, २४.०१.२०१७ ।

मानो झुनझुनु धरती पर कदर रखते हि आखो में आँसु और शरीर के रेसे पुरे खड़े हो गए कि मानो दादी जी हम सब पुरे परिवार को पुकार रही हो ।

पुरा परिवार आनंदमए था ।

पुरे परिवार ने माँ को अर्पन करने के लिए प्रसाद, प्यारी-प्यारी चुनँरी लि

३ पड़ाव के बाद हम सब

!!ᴪ माँ ᴪ!!

के सामने खड़े थे ।

मुझे पता नही क्या हुआ जिस माँ के दर्शन के लिए छिप-छिप कर रोते थे, बिलखते थे, जब भी किसी से सुना कि वो खाटु श्याम जी के यहाँ जा रहा है, वो झुझुनू कि सेठानी के पास जा रहा है पता नही ये आँखे नम हो जाया करती थी, पर उनके सामने जैसे सब कुछ सपना सा लग रहा था, लग ही नही रहा था कि मै-हम सब माँ के सामने खड़े थे ।

उनको निहारे जा रहे थे ।

लेकिन आज ये व्याखया लिखते वक्त भी मेरे नैन नम है,

मुझे याद भी नही ठिक से कि मैने माँ को कैसे

निहारा - उनके तेज सा चमक्ता हुआ चाँद सा मुखड़ा देख कर

मैने माँ से एक बात कही कि माँ आपसे मिलने के लिए कितना रोया पर आज ये आसुँडा क्यु सुख सा गया है, आज तेरा बेटा तेरे सामने खड़ा है रुला मुझे माँ रुला, पर माँ कि इच्छा शायद कुछ और ही थी मानों ।

फिर हमने प्रसाद-चुनरी इत्यादी माँ को अर्पन किया, हमारा पुरा परिवार भी दादी भक्ती में लिन था । सबने माँ को सवासतिक (चौका)रोली मेहन्दी अर्पन कि, सबने फेरी पुरी कि और झुम कर, मगन हो कर, अपने आप को माँ को सौप कर नाँचा-झुमाँ ।

मंदिर प्रांगन में मंगल पाठ चल रहाँ था जिसके कारण हमें रोक दिया गया । फिर मेंरे मन में आया कि माँ को सामने से निहारु, मैं माँ के समिप गयाँ ।

पता नही कहाँ कैसे क्या हो गया मैं बैठ गया माँ के सामने ।

(इस वयाखया को लिख तो रहाँ हुँ पर मेंरे हाथ मेरा साथ नही दे रहाँ)

।। जय दादी कि ।।

ब्स एक बार मैने फिर से अरजी लगाई माँ

!! मइया तेरा टाबरइया थना याद करें ।।

रुला दे अपने बेटे ने रोना चाहँता हुँ

बस अपने शिश को ज्यो हि झुकाया पता नही आँखो से निर रुकने कि धारा में नही थी ।

मुझे नही पता था माँ के सामने इतना फुट-फुट कर क्यो रोया मानो इसमें ही माँ कि मरजी होगी ।

उसके उपरांत ताई जी आई मेरे पास मुझे चुप कराने के लिए जैसे मानो माँ स्वंय आयी हो और मुझे चुप करवा रही हो ।

!! दिल की बात बताउ मैं कईया, सुन मेरी मईया रे

आखँया का आसुँड़ा मईया, थमेगा कईया रे..............!!

दिल को यो शुकुन सा मिल रहा था कि मानो ये आँसु बस बहता रहै और मैं माँ के सामने युँ ही बैठा रहुँ ।

इससे आगे कि व्यथा मेरा दिल लिखने के लिए साथ नही दे रहाँ है ।

आगे.........................

हमस सब पुरा परिवार झुनझुनु कि सेठानी, माँ राणी सती दादी से आज्ञा लेकर मंदिर प्राणगन से बाहर आए और पुरे मंदिर का भ्रमण के लिए निकल गए जहाँ सबने कुछ और बहोत सारे यादगार पल बिताए

चालो चालो राजस्थान जठे बिराजे आपनो देवी देवता

जिसके कुछ पल दिखाना चाहुँगा ....

इतने यादगार पल कि शायद ही कोई ऐसे भक्त होंगे जो ये पल भुल पाए ।

खैर हमारा सफर का समय बित्ता ही जा रहा था और अब हमें केडसती में भी हाजरी लगानी थी और उसके उपरान्त

बालाजी धाम (सालासर धाम की हाजरी)

आखिरी बिदा माँ राणी सती से हम सब ने लिया और संध्या ४:३० बजे, २४.०१.२०१७ हम केडसती के लिए रवाना होने के लिए तैयार थे और ४:४५ में हम सब एक साथ खाटु श्याम एंव माँ राणी सती दादी जी की किर्पा सागे लेकर केडसती के लिए रवाना हो गए ।

::हमारा छट्ठा पड़ाव :

केडसती धाम

सफर का समय : संध्या 4:45 झुनझुनु से रात्री 8 बजे केडसती तक

दिनांक :- २४.०१.२०१७, मंगलवार

पुरे ४ घन्टे के सफर में हमलोगो के सागे-सागे खाटु नरेश एंव माँ राणी सती दादी जी भी सागे चल रहे थे और हम सब उनका नाम जपते हुए *भजन भक्ती* में लिन होकर बस आगे का सफर तय किये जा रहे थे ।

रात्री ८ बजे के आस पास हम सब माँ केडसती धाम के द्वार पे पहुँच चुके थे ।
पुरा परिवार लगभग थक चुका था ।
पुरे परिवार ने एक दुसरे कि साहयता उनके सामान-बैग सब उनके दिये गए रुम तक पहुँचाने मे मदद की ।
सबने थोड़ा विशराम के बाद रात्री भोजन जिमा और फिर सब अपने-अपने दिए गए व्यवसथा में आराम करने चले गए और सभी को अगले दिन का कार्यक्रम भी बताया दिया गया ।

दिनांक :- २५.०१.२०१७, बुधवार
स्थान - केडसती धाम

सारे भक्त आनंदमय सुबह के साथ खाटु श्याम एंव दादी जी का नाम के साथ माँ केडसती के छत्र छाया में थे । केडसती धाम की व्याखया करते बन रही थी सुबह कि मिठी-मिठी हवाँ और माँ की छत्र-छाया बस झुमने का मन कर रहा था सबका ।
पुरे परिवार ने स्नान आदी कर पवित्र होकर माँ केडसती के दर्शन बहोत ही प्यार से किया ।
केडसती प्रांगन में और भी देवी-देवता बिराजमान है । सबने उनके भी दर्शन किये ।

चालो चालो राजस्थान जठे बिराजे आपनो देवी देवता

कुछ पल केडसती धाम में ।

इतनी मौज-मसती कि मानो कहे भी तो कैसे, सबसे बड़ी बात

खाटु श्याम जी - राणी सती दादी जी - माँ केडसती - पितर देव

चालो चालो राजस्थान जठे बिराजे आपनो देवी देवता

सब के आर्शीवाद आशिश में हम सब अपने सफर को आनंदमए पल देते जा रहे थे हमारे **देवी-देवता** के बिना हम भक्तों का कोई अशत्तिव नही, वो है तो हम हैं । उनके बिना एक पल भी व्यर्थ है, एक आदत सी हो चली है ....

:: !! तेंरे नाम से सुबह .... तेंरे नाम से रात !! ::

केड सती धाम में बहोत ही अच्छे और सुहाने पल के बाद हमारा सफर **सालासर धाम** के लिए होना था । इसलिए सब कोई केडसती में नाश्ता करने के उपरान्त फिर से तैयार थे **शालासर धाम** के लिए ।

हम सब **माँ केडसती, खाटु श्याम जी, माँ राणी सती, झुनझुनु** के अशिवार्द के साथ हम सब पुरा परिवार उपने अगले सफर के लिए रवाना हुए ।

::हमारा सातुवा पड़ाव :

:: शालासर धाम- चुरु ::

सफर का समय : सुबह 10:30 से दापहर 1:30 बजे शालासर धाम तक 25-01-2017
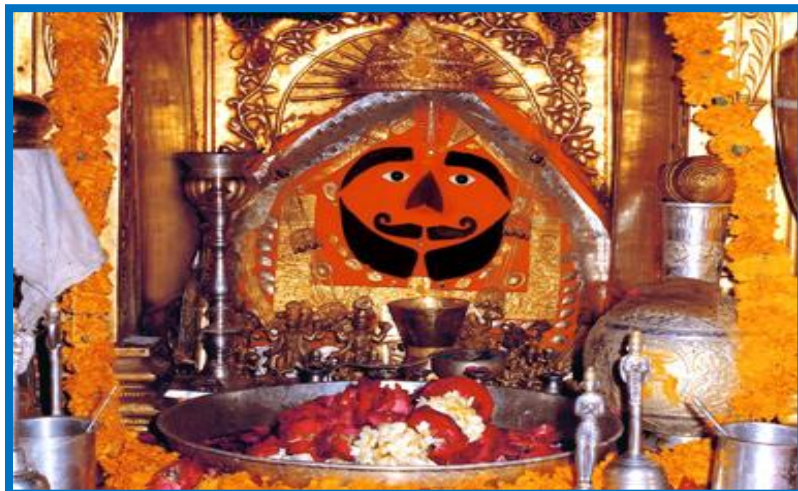
दिनांक :- २५.०१.२०१७, बुधवार

सफर युही गुजरता गया, हम सब अपने सफर के आखरी पड़ावों पर थें, हम सब भक्ती भाव में मगन-लिन हो चुके थे ।
हम सब दोपहर १:३० बजे के आस पास सब शालासर नगरी पहुँच चुके थे (३ घण्टे) बस अब हमारे बालाजी के दर्शन

कहते है सब
।। :: जग घुमया थारे जैसा ना कोई :: ।।
सालासर धाम में
बालाजी की हाजरी जरुरी है :: ।।

बस और क्या दोपहर २ बजे के आस-पास हम सब शालासर के बालाजी के समीप पहुँच चुके थें । पुरे परिवार ने प्रसाद अर्पन के हेतु मंदिर प्रांगन से हि लिया ऐव कुछ ही छनो में

पुरा परिवार बालाजी के समक्ष साखक्षात खड़ा था, सबने बालाजी के अच्छे से दर्शन किये । प्रसाद अर्पन किया एंव सभी देवी देवता बिराजमान के भी दर्शन कर सभी भक्त त्रिप्त थे ।

स्बने मिलकर जयकारा बालाजी माहाराज का लगाया
:: जय हो शालासर धाम की ::

चालो चालो राजस्थान जठे बिराजे आपनो देवी देवता

माहरे मनड़े री सुन ले पुकार...................

शालासर बालाजी.................. ।।

थारा भगत करे मनुहार..................

शालासर बालाजी.................. ।।

उसके उपरान्त सबने खाना खाया एंव जिनको समान वगेरा खरिदारी करनी थी वे सब मार्केट कि और निकल गए ।

उसके उपरान्त हमें वापस जयपुर के लिए प्रस्थान करना था इसलिए सब तय समय अनुसार पर जयपुर रवाना होने के लिए आ गए ।

सबके मन में बस यही भावना थी की बस हर साल क्या हरदम राजस्थान में बिराजे सभी देवी-देवता कि दरशन करने आए ।

कहते है ना कि : उसको ही मिलता है श्याम-दादी जी-बालाजी तेरा दरबार-तेरा प्यार-हर बार जिसके हो कर्म अशरदार ।

पंरे परिवार ने मिलकर फिर से जयकारा लगाय..........

जय श्री श्याम ।।

जय दादी कि ।।

जय माँ केडसती कि ।।

जय शलासर महाराज कि ।।

उसके उपरान्त हम सब वापस अपने बस सेवा के पास पहुँचे जो हमें जयपुर वापस लेजाने के लिए खड़ी थी ।

सभी मानो बहुत खुश थे कि हमारा ये सफर बहोत ही मजेदार रहाँ और प्रार्थना करते है कि हर बार इसी तरह हमें आने का मौका मिलते रहे । हम सब रात्री 8 बजे के आस पास जयपुर पहुचने के बाद वहाँ रात्री भोजन के उपरान्त रात्री विश्राम किया गया ।

::हमारा आठवा पड़ाव :

:: जयपुर ::

दिनांक :- २६.०१.२०१७, गुरुवार

इतनी खुशी का पल

इतना खुशी का पल समेटे समेटा नही जा रहाँ था बस मन कर रहाँ था कि बस किसी तरह पंख लग जाए और फिर एक बार उड़ चलु सेठ-सेठानी के पास ।

लेकिन समय कि नजाकत भला कौन झुठला सकता है सिवाय हमारे सेठ-सेठानी के, हमें अपने संसार में अपने कार्य निर्वाह हेतु वापस भी जाना था ।

हमलोग सब सुबह श्री श्याम एंव दादी जी, बालाजी के नाम लेकर अपनी यात्रा वापस उपने घर कि और तैयार हो चुके थे ।

चालो चालो राजस्थान जठे बिराजे आपनो देवी देवता

पुरे सफर कि दौरान वर्षा नही हुई, लेकिल २६.०१.२०१७ कि सुबह वर्षा हो रही थी । जिसके कारण हम सबको जयपुर (जहाँ हम सब रुके हुए थे) से जयपुर रेलवे स्टेश्न तक थोड़ी मोड़ी परेशानी हुई लेकिन समय से पहले हम सब ठिक ठाक पहुँच गए और अपने ट्रेन का इंतजार करने लगे जो श्याम एंव दादी क्रिपा से समय पे थी और हम सब ट्रेन आते हि पुंरा स्टेशन मानो गुँज सा गया हमारे
श्याम एंव दादी जी, शलासर जी, केडसयती के जयकारे से ।

और फिर क्या बस हमारा सफर बहुँत ही अच्छे से हुआ ।
जिसके लिए हमारे देवी देवता का आर्शिवाद सबसे जरुरी था ।
एक श्याम प्रेमी ने मुझे श्री श्याम एंव दादी मंदिर, नियामतपुर मंदिर में कहा था कि भईया जी जब तक इनका बुलावा नही आता उनके धाम पहुँचना मुशकिल है, सब इनकी इच्छा से है,..............
सही कहाँ था आपने श्याम एंव दादी जी के इच्छा कें बिना कुछ नही होता ।
इस किताब में जो भी लिखा गया है वो सब सत्य है, मन से बना कर कुछ भी लिखा नही गया है ।

इस किताब तो लिखने से लेकर अंत पड़वा तक कई दिन और प्रतिक भईया के मार्ग दर्शन मिला जिसके लिए मै उनका धन्यवाद देना चाहुँगा।
मै जिवन में पहली बार ही गया खाटु-झुनझु गया ।
मेरा जिवन मेंरे माता-पिता एंव संठ-सेठानी कि क्रिपा से हि चल रहा है

और इस पड़ाव के दौरान मै ....
२ बार मै सव्यम खाटु धाम सपनो में फिर से घुम कर आया,
१ बार झुनझुनु धाम कि नगरी मै घुम कर आ चुका हुँ

लेकिल हिम्मत नही हुई कि किसी को भी बता सकु पता नही क्युँ ।

मुझे नही पता कि सपनो में उनके दर्शन किसी को बताना चाहिए कि नही लेकिन फिर भी मै लिख रहाँ हुँ ।
लेकिन मै एक दिल से बात आप सभी जो भी ये किताब पड़ रहे है कि हमारे श्याम एंव दादी जी के भक्ती में दिखावा नही होनी चाहिए क्योकी आज के समय में एक दिखावा कि दुनिया है ।

इस किताब को एक सेवा, गुनगान के तौर पर लिया जाए
इस किताब का मक्सद कुछ नही ब्लकी हमारे देंवी - देवती के दर्शन के साथ हमारे ४० लोगो के परिवार के यादो को संजोग कर रखना था ।

यु तेरी क्रिपा की है असर सावरे........।।
स्कर सावरे तेरा सुकर सावरे............।।
मै जबसे तेरी सरण मे आया........।।
जो कुछ भी मांगा तूंझसे है पाया............।।
ये जिवन गया है सुधर सावरे...........।।

धन्य है वो जिवन जो सबसे पहले करते है अपने मात-पिता को नमन,
अच्छे कर्म के सागे हो जिवन-सुखी रहे वो सदा ।

लेखक : अभिषेक अग्रवाल(चिनाकुड़ी श्याम परिवार)